टिप्पणी

नहीं रहेंगी, बल्कि उनसे बेहतर ही कर दिखाएँगी और इसी जज़्बे से पर्वतारोहण का प्रशिक्षण लेना शुरू कर दिया।

बचेंद्री को बचपन में रोज़ 5 किलोमीटर पैदल चलकर स्कूल जाना पड़ता था। बाद में पर्वतारोहण प्रशिक्षण के दौरान् उनका यह कठोर परिश्रम बहुत काम आया। आठवीं पास करने के बाद पिता ने उनकी पढ़ाई का ख़र्च उठाने से मना कर दिया। बचेंद्री ने इसका भी रास्ता तलाश किया। उन्होंने सिलाई का काम सीखा और सिलाई करके पढ़ाई का ख़र्च जुटाने लगीं। इस तरह उन्होंने संस्कृत से एम.ए. तथा बी.एड. की उपाधि प्राप्त की।

पढ़ाई के साथ-साथ बचेंद्री ने पहाड़ पर चढ़ने के अपने लक्ष्य को हमेशा अपने सामने रखा। इसी दौरान बचेंद्री ने 'कालानाग' पर्वत की चढ़ाई की। 1982 में उन्होंने 'गंगोत्री ग्लेशियर' (ऊँचाई– 6,672 मी०) तथा 'रूड गैरा' (ऊँचाई– 5,819 मी०) की चढ़ाई की, जिससे इनमें आत्मविश्वास और बढ़ा।

अगस्त, 1983 में जब दिल्ली में हिमालय पर्वतारोहियों का सम्मेलन हुआ, तब वे पहली बार तेनज़िंग नोर्गे (एवरेस्ट पर चढ़ने वाले पहले पुरुष) तथा जुंके ताबी (एवरेस्ट पर चढ़ने वाली पहली महिला) से मिलीं। तब उन्होंने संकल्प किया कि वे भी उनकी ही तरह एवरेस्ट पर पहुँचेंगी। वह दिन भी आया, जब 23 मई, 1984 को दोपहर 1 बजकर 7 मिनट पर एवरेस्ट पर पहुँचकर भारत का झंडा फहरा दिया। उस समय उनके साथ पर्वतारोही अंग दोरजी भी थे। इस तरह, बचेंद्री को एवरेस्ट पर पहुँचने वाली पहली भारतीय महिला होने का गौरव प्राप्त हुआ।

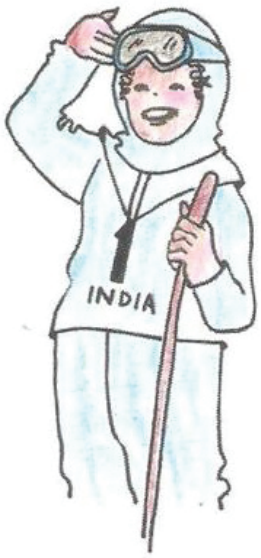

चित्र 6.6

हम कह सकते हैं कि अदम्य साहस और आत्मविश्वास के बल पर भारतीय महिलाओं ने पूरी दुनिया में अपनी अलग पहचान बनाई है। बहुत साधनों के न होते हुए भी उन्होंने लक्ष्यप्राप्ति में आने वाली कठिनाइयों के सामने कभी घुटने नहीं टेके। उन्होंने सिद्ध कर दिखाया कि अगर व्यक्ति में आत्मविश्वास, लगन, साहस

और दृढ़ इच्छा शक्ति हो तो अभाव या अन्य कोई भी कठिनाई उनका रास्ता नहीं रोक सकती।

पाठगत प्रश्न-6.3

1. सर्वाधिक उपयुक्त विकल्प चुनकर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

(i) एवरेस्ट अभियान-दल में बचेंद्री के साथ निम्न में से कौन था?

(क) तेनज़िंग ☐ (ख) हंसा देई ☐

(ग) जुंके ताबी ☐ (घ) अंग दोरजी ☐

(ii) बचेंद्री का पर्वतारोही बनने का संकल्प किस बात से मज़बूत हुआ?

(क) पिता द्वारा पढ़ाई का खर्च न देने से ☐

(ख) लड़की होने के कारण उपेक्षा से ☐

(ग) सिलाई द्वारा प्राप्त आमदनी से ☐

(घ) उच्च शिक्षा से प्राप्त आत्मविश्वास से ☐

2. पाठ के आधार पर निम्नलिखित घटनाओं को सही क्रम में लिखिए :

(क) अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए बचेंद्री ने सिलाई का काम सीखा और कपड़े सिले।

(ख) बचेंद्री का जन्म सन् 1954 में चमोली जिले के एक अत्यंत साधारण परिवार में हुआ।

(ग) 23 मई, 1984 को दिन के 1 बजकर 7 मिनट पर बचेंद्री ने माउंट एवरेस्ट पर भारतीय तिरंगा लहरा दिया।

(घ) बड़े भाई द्वारा तिरस्कार से बचेंद्री का पर्वतारोहण का संकल्प और दृढ़ होता गया।

(ङ) संसार के सर्वोच्च शिखर पर पहुँचने वाली वह प्रथम भारतीय महिला बन गई।

फ़ीचर क्या है?

'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' शीर्षक पाठ को आपने पढ़ा। इसे फीचर की शैली में लिखा गया है।

टिप्पणी

आइए, जान लें कि फ़ीचर क्या है?

आप जानते हैं, अखबारों में समाचार छपते हैं। समाचारों से केवल यह जानकारी मिलती है कि क्या हुआ। उदाहरण के लिए, कल्पना चावला ने अंतरिक्ष में उड़ान भरी, तो अखबारों में यह खबर छपी कि एक भारतीय महिला ने अंतरिक्ष की परिक्रमा की। लेकिन कल्पना कौन है, वह अंतरिक्ष में जाने का साहस कैसे जुटा पाई, उसकी इस बहादुरी ने समाज को किस प्रकार से प्रभावित किया? इन बातों को सरल भाषा और मनोरंजक शैली में बताया जाए, तो वह फ़ीचर होगा। अर्थात् 'क्या हुआ?' यह बताना समाचार है। ''जो कुछ हुआ वह क्यों और कैसे हुआ और इसका परिणाम क्या होगा'', यह बताना फीचर का काम है। फ़ीचर में घटनाओं को हमारी आँखों के आगे उतार दिया जाता है, कानों में घटनाओं की आवाज़ गुँजा दी जाती है। अखबार के तीन काम बताए जाते हैं—सूचना देना, शिक्षा देना और मनोरंजन करना। समाचार सूचना देते हैं। फ़ीचर हमें शिक्षित करते हैं और हमारा मनोरंजन करते हैं। फ़ीचर में इस बात का ध्यान रखा जाता है कि वह रोचक भी हो। फ़ीचर कई प्रकार के होते हैं या हो सकते हैं—जनरुचि वाले, गंभीर विश्लेषणात्मक, हल्के-फुल्के और मनोरंजक तथा व्यक्तित्व संबंधी। 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' अंश व्यक्तित्व संबंधी या 'पर्सनैलिटी फ़ीचर' है।

'फ़ीचर' पत्रकारिता जगत की महत्त्वपूर्ण विधा है, जिसमें समसामयिक पकड़ को प्रधानता दी जाती है। यही कारण है कि इसको **'समाचारात्मक निबंध'** की संज्ञा दी जा सकती है। विषय प्रस्तुति ही फ़ीचर को शक्ति देता है। यह किसी पाठक के लिए शिक्षक, पथ-प्रदर्शक का काम करता है। इसकी भाषा सहज, सरल और सभी को समझ में आने वाली होती है। इसमें प्रसंगानुसार शब्दों का चयन किया जाता है। ये शब्द किसी भी भाषा के हो सकते हैं। जैसा कि आपने यहाँ ध्यान दिया होगा कल्पना चावला वाले अंश में इंजीनियरिंग की विविध शाखाएँ प्रचलित हैं—मैकेनिकल, कैमिकल या एअरोनोटिकल, इन्हें ज्यों का त्यों ले लिया गया है। इसी प्रकार अन्य अनेक अंग्रेजी के शब्दों का प्रयोग भी य़हाँ–वहाँ आपने पढ़ा है, उन पर ध्यान दीजिए।

फ़ीचर में शैली का विशेष ध्यान रखा जाता है। यहाँ मनोरंजक शैली का ही प्रयोग किया गया है। इसके साथ चित्र, छाया-चित्र भी हों तो इसको **'सचित्र फ़ीचर'** कहते हैं, मात्र चित्र ही चित्र हों तो **'फ़ोटो फ़ीचर'**।

रेडियो-फ़ीचर भी होते हैं, किंतु ध्वनि-माध्यम होने के कारण उनकी शैली बिलकुल भिन्न होती है।

क्रियाकलाप-6.1

1. आपको जो भी खिलाड़ी अच्छा लगता हो, उसकी विशेषताएँ बताते हुए उस पर फ़ीचर लिखिए।
2. अपनी माँ पर एक फीचर लिखिए।
3. अपने आसपास की किसी ऐसी महिला का चित्रण कीजिए जिन्होंने किसी–न–किसी क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया हो।

....

....

....

....

....

....

आपने क्या सीखा?

- 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है, जो विभिन्न क्षेत्रों में प्रसिद्धि के शिखर पर पहुँची महिलाओं पर लिखा गया है।
- महिलाएँ पुरुषों से कम नहीं है। भारत की बेटियों ने अपने आत्मविश्वास, संकल्प और परिश्रम से ऐसी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, जिससे भारत को पूरे संसार में सिर उठाने का मौका मिला है। नारियों में अदम्य शक्ति छिपी है। उन्हें उपयुक्त अवसर मिलना चाहिए। कल्पना चावला, बचेंद्री पाल जैसी बहादुर बेटियों की जीवन-कथाएँ सभी को प्रेरित करेंगी।
- दुनिया की आधी आबादी महिलाओं की है। उनके विकास से ही किसी देश का, दुनिया का विकास संभव है।
- नारी-शक्ति की दृष्टि से भारत किसी भी देश से पीछे नहीं है। इन्हीं बातों को इस फ़ीचर में दो नारियों के माध्यम से बताया गया है। आधुनिक नारियाँ छुई-मुई नहीं हैं, वे शक्ति-स्वरूपा हैं।

टिप्पणी

योग्यता विस्तार

अब भारत में महिलाओं की रक्षा के लिए और उनके साथ किए जाने वाले भेदभाव के ख़िलाफ़ कई कानून बन गए हैं, जिनके द्वारा समाज में उनकी स्थिति को बेहतर बनाने के प्रयास किए जा रहे हैं। हमारे यहाँ जन्म से पूर्व ही परीक्षण करवा कर संतान का लिंग पता कर लिया जाता था तथा यह पता चलने पर कि गर्भ में पलने वाली संतान कन्या होगी, कई बार गर्भपात करवा दिया जाता था। यह संभव न होने पर पैदा होते ही नवजात कन्या को मारने के उदाहरण भी सामने आए। इन सब स्थितियों को ध्यान में रखते हुए ही 1994 में प्रसव-पूर्व निदान तकनीकी अधिनियम पारित किया गया जिसके द्वारा गर्भावस्था में लिंग की पहचान पर रोक लगा दी गई। यही नहीं, भ्रूण-हत्या को अपराध घोषित करते हुए उचित दंड का भी प्रावधान किया गया। महिलाओं की रक्षा और सशक्तीकरण हेतु अनेक ऐसे नियम बनाए गए, जिनके द्वारा यदि पुरुष परिवार में अपना वर्चस्व साबित करने के लिए उन्हें प्रताड़ित करता है या परेशान करता है, तो वे उसे घरेलू हिंसा कानून के अंतर्गत दंडित करा सकती हैं। आज महिलाओं का आत्मविश्वास तो बढ़ा ही है वे स्वयं भी और अधिक साहसी बनी हैं। चाहे वह छेड़खानी का मामला हो, भेदभाव का मामला हो, दहेज़ का मामला हो या उनके साथ किसी तरह के अन्य अन्याय का; महिलाएँ स्वयं उठकर खड़ी हो जाती हैं और इसका विरोध करती हैं। अब तो महिलाओं ने अपने अधिकार के लिए कई स्वयंसेवी संगठन भी खोल लिए हैं। हाल ही में जब अमेरिका मानव-क्लोनिंग की वकालत कर रहा था, तब महिलाओं ने इसे मातृत्व के ख़िलाफ़ एक साज़िश बताया और उसके विरोध में उठ खड़ी हुईं। इसके परिणामस्वरूप पूरी दुनिया में मानव-क्लोनिंग पर रोक लगी।

इस तरह आधुनिक महिला ने अधिक आत्मविश्वासी, निर्भय, निर्णय लेने की क्षमता से परिपूर्ण, कर्त्तव्य-निष्ठ, ईमानदार और अनुशासन प्रिय होकर समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाई है। वह अपने अधिकारों के प्रति पूरी तरह सजग और अन्याय के विरोध में कमर कसकर तैयार खड़ी है। बस ज़रूरत है उसकी क्षमता और कौशल को समझने की, उसे प्रोत्साहित करने की और उसकी सराहना करने की।

पाठांत प्रश्न

1. कल्पना चावला को लोगों ने एअरोनॉटिकल इन्जीनियरिंग पढ़ने से क्यों मना किया? अगर आपके जीवन में ऐसी परिस्थिति आए, तो आप कल्पना चावला के जीवन से क्या प्रेरणा लेंगे?

टिप्पणी

2. बचेंद्री पाल ने सिलाई करके पढ़ाई जारी रखी। यदि आपके सामने भी इसी तरह की कोई आर्थिक या पारिवारिक समस्या आए, तो आप उसका हल किस प्रकार निकालेंगे? लिखिए।

3. फ़ीचर किसे कहते हैं? 'भारत की ये बहादुर बेटियाँ' एक फ़ीचर है'। सिद्ध कीजिए।

4. इस पाठ का शीर्षक आपको उचित लगता है या नहीं? यदि उचित लगता है तो क्यों?

5. कल्पना चावला और बचेंद्री पाल अपने विषय में सोच-समझकर स्वयं फ़ैसला लेने वाली, साहसी, दृढ़ निश्चयी, आत्म-विश्वासी महिलाएं हैं, इसीलिए वे आज इस रूप में याद की जाती हैं। इसी तरह की किसी एक महिला पर एक फ़ीचर लिखिए।

6. आज भी हमारे समाज के कुछ हिस्सों में लड़के और लड़की में भेद किया जाता है, क्या आपकी दृष्टि में यह उचित है–तर्कसहित लिखिए।

7. निम्नलिखित अनुच्छेद पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए :

तैराकी आनंद की वस्तु होने के साथ-साथ हमारी आवश्यकता भी है। नदियों के आसपास के गाँवों के लोग, सड़क-मार्ग न होने पर एक दूसरे से तभी मिल सकते हैं, जब उन्हें तैरना आता हो अथवा नदियों में नावें हों। प्राचीन काल में नावें कहाँ थीं? तब तो आदमी को तैरकर ही नदियों को पार करना पड़ता था। किंतु, तैरने के लिए आदिम मनुष्य को निश्चय ही प्रयत्न और परिश्रम करना पड़ा होगा, क्योंकि उसमें अन्य प्राणियों की भाँति तैरने की जन्मजात क्षमता नहीं है। जल में मछली आदि जलजीवों को स्वच्छंद विचरण करते देख मनुष्य ने उसी प्रकार तैरना सीखने का प्रयत्न किया और धीरे-धीरे उसने इस कार्य में इतनी निपुणता प्राप्त कर ली कि आज तैराकी एक कला के रूप में गिनी जाने लगी है। विश्व में जो खेल प्रतियोगिताएँ आयोजित की जाती हैं, उनमें तैराकी प्रतियोगिता अनिवार्य रूप से सम्मिलित की जाती है।

प्रश्न :

1. प्राचीन काल में तैराकी मनुष्य की आवश्यकता क्यों थी?
2. तैराकी व्यायाम है या खेल अथवा दोनों? सही तर्क देते हुए लिखिए।
3. इस अनुच्छेद का सार एक तिहाई शब्दों में लिखिए। अनुच्छेद का उचित शीर्षक लिखिए।
4. अनुच्छेद से जातिवाचक संज्ञा के पाँच उदाहरण छाँटकर लिखिए।
5. अनुच्छेद से ऐसे दो–दो शब्द छाँटिए, जिनमें उपसर्ग या प्रत्यय हों। उन शब्दों में शामिल उपसर्ग तथा दो प्रत्ययों का भी उल्लेख कीजिए।

टिप्पणी

उत्तरमाला

पाठगत प्रश्नों के उत्तर

6.1 1 (घ) 2. (च), (ङ), (घ), (ख), (क) (ग) 3. (ख) 4. (घ)

6.2 1 (ग) 2. (क) 3. (क), (घ), (ग), (ख)

6.3 (i) (घ) (ii) (ख) 2. (ख), (क), (घ), (ग), (ङ)